4

मसीह की देह

''इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो'' (1 कुरिन्थियों 12:27)।

मान लीजिए कि एक आदमी छोटे हवाई जहाज को कार की तरह इस्तेमाल करने का प्रयास करता है। उसे यह हवाई जहाज चलाने में कठिन, तीखे मोड़ों पर कठिनाई से मुड़ने वाला, यात्रियों की सुविधा के लिए सही नहीं, सड़क पर चलने के लिए असुविधाजनक और राजमार्ग के यातायात के लिए पूरी तरह से अयोग्य लगेगा। हवाई जहाज़ को कार की तरह इस्तेमाल करने के लिए उपयुक्त होने की बात जहाज़ के ''स्वाभाविक चरित्र'' के विपरीत है। इसे इस तरह के इस्तेमाल के लिए नहीं बनाया गया था और इसका इस प्रकार इस्तेमाल करना जहाज के स्वभाव के विरुद्ध माना जाएगा।

नये नियम की कलीसिया की गलत तस्वीर प्राय: कलीसिया के स्वभाव को न समझने के कारण है। इसलिए, संसार में कलीसिया के कार्य, उद्देश्य तथा पहचान को पूरी तरह से समझने के लिए इसके ''स्वाभाविक चरित्र'' को समझना आवश्यक है।

जैसे कि हम देख चुके हैं, कलीसिया के लिए नये नियम की मुख्य अभिव्यक्तियों (विशेषकर पौलुस के लेखों) में से एक अभिव्यक्ति ''मसीह की देह'' है।[1] इस वाक्यांश का इस्तेमाल कलीसिया के व्यावहारिक उदाहरण (1 कुरिन्थियों 12:23-26) और इसके क्रियात्मक वर्णन (1 कुरिन्थियों 12:27) के रूप में किया जाता है। इस वाक्यांश को कलीसिया के संदर्भ में पूरी तरह समझे बिना नये नियम की कलीसिया के स्वभाव को समझना असम्भव है।

आइए कलीसिया के लिए नये नियम के इस पदनाम पर विशेष ध्यान देते हैं। इस अभिव्यक्ति से क्या संकेत मिलता है ?

मसीह से मेल

पहली बात, यह वाक्यांश मसीह से मेल का संकेत देता है। मनपरिवर्तन का अर्थ ''मसीह के प्रति अपनी वफ़ादारी गिरवी रखने'' से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ मसीह की आत्मिक देह में प्रवेश पाने वाले की तरह मसीह के साथ विलक्षण रूप में एक होना है।

मसीह में मनपरिवर्तन की प्रक्रिया के भाग के रूप में, हमें मसीह में बपतिस्मा दिया जाता है। पौलुस ने लिखा है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया'' (रोमियों 6:3)। मसीह के साथ एक होने का विचार विशेष रूप से रोमियों 6:4 में देखा जाता है: ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम *उस के साथ* गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।'' पौलुस ने यह भी कहा, ''क्योंकि हम सब ने ... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया ...'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। फिर, बपतिस्मे के समय हमें मसीह की आत्मिक देह में प्रवेश करवाकर उसके साथ मेल में लाया जाता है।

मसीह के साथ, इस अद्‌भुत आत्मिक मेल की तुलना विवाह से की जा सकती है। विवाह में पुरुष तथा स्त्री द्वारा ''जीवन भर के लिए एक दूसरे के प्रति दो लोगों की वचनबद्धता'' से कुछ बढ़कर होता है। विवाह एक मेल है, जो इतना गहरा है कि पति और पत्नी को जीवन भर के लिए ''एक तन'' कहा जाता है (इफिसियों 5:31)। किसी दम्पत्ति के विषय में प्राय: हम कहते हैं, ''उन्होंने एक दूसरे के साथ इकरार कर लिया है।'' विवाह के संदर्भ में शायद यह कहना अधिक उचित होगा, ''उन्होंने विवाह के मेल में प्रवेश किया।'' ''मेल'' शब्द निरन्तर चलने वाली एकता का संकेत है। विवाह दो लोगों के एक साथ चलने या एक मकान में रहने की सहमति नहीं बल्कि दो लोगों की विवाह के बंधन में इकट्‌ठे रहने, जीवन भर के लिए एक होने का समझौता अर्थात इकरारनामा है। जिसे केवल व्यभिचार या मृत्यु ही भंग कर सकती है। यह बात यहां तक सत्य है कि इसमें प्रवेश करते समय दो लोग अपने शरीरों को भी अधिकार करने के लिए एक दूसरे को सौंप देते हैं। पौलुस ने लिखा है, ''पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को'' (1 कुरिन्थियों 7:4)।

ऐसे ही, मनपरिवर्तन के समय मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में मिलाए जाने पर हमारा मेल उससे होता है। हम मसीह के साथ एक हो जाते हैं अर्थात मसीह हमारा है और हम मसीह के हैं। अब अपने जीवन पर हमारा कोई अधिकार नहीं है; क्योंकि हम मसीह के हो चुके हैं अर्थात हम उसके साथ एक तन होकर जीवन व्यतीत करते हैं (1 कुरिन्थियों 6:16)।

मसीह के द्वारा मेल

दूसरा, ''मसीह की देह'' के रूप में कलीसिया के चित्रण में मसीह के द्वारा मेल का पता चलता है। इस चित्रण से कलीसिया को एक जीव के रूप में दिखाया जाता है जिसके बहुत से अंग एक देह के रूप में मिलकर काम करते हैं।

पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है'' (1 कुरिन्थियों 12:12)। बहुत से भिन्न-भिन्न अंगों के मेल से मसीह की एक देह

बनती है। जो बातें पौलुस ने शारीरिक देह के लिए बताईं वही कलीसिया के लिए भी कही जा सकती हैं: ''इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं''; ''यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती'' (1 कुरिन्थियों 12:14, 19)। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि मसीही लोग ''मसीह की देह हैं और अलग-अलग उसके अंग हैं'' (1 कुरिन्थियों 12:27)।

''मसीह की देह'' की अभिव्यक्ति में न केवल यह संकेत है कि हमारा सम्बन्ध मसीह से है बल्कि यह भी कि जैसे शारीरिक देह के अंग दूसरे अंगों से जुड़े होते हैं वैसे ही हमारा सम्बन्ध भी एक दूसरे से होना चाहिए। जब देह के एक अंग को चोट लगती है, तो पीड़ा सभी अंग महसूस करते हैं। ''देह'' की धारणा से एक स्पष्ट अनुमान यह होगा: ''ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे के बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो उसके साथ सब अंग दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की प्रशंसा होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 12:25, 26)।

''मसीह की देह'' की अभिव्यक्ति की समझ आ जाने पर, साम्प्रदायिक कलीसिया के तर्क का आधार समाप्त हो जाता है। साम्प्रदायिक कलीसिया का विचार बहुत सी अलग-अलग देहों की वकालत करता है जिसमें प्रत्येक कलीसिया की अपनी पहचान तथा विश्वास हो। नये नियम में ''मसीह की देह'' की विचारधारा एक देह अर्थात मसीह की देह को प्रत्येक मसीही के इसके सदस्य के रूप में, सब दूसरे सदस्यों से प्रेम करके और उस देह को दूसरे सभी सदस्यों की खोज करने के रूप में दिखाई जाती है। यदि नये नियम की कलीसिया मसीह की देह है, तो साम्प्रदायिक कलीसिया का विचार ''कलीसिया'' के लिए परमेश्वर का नमूना नहीं हो सकता और यदि साम्प्रदायिक कलीसिया का विचार सही है तो नये नियम की कलीसिया मसीह की वह देह नहीं हो सकती।

अपने पकड़वाए जाने और गिरफ्तार होने की रात, यीशु ने उन लोगों की एकता के लिए प्रार्थना की थी जिन्होंने बाद में उस पर विश्वास करना था (यूहन्ना 17:21-24)। मुर्दों में से जी उठने के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन मसीह ने पृथ्वी पर अपनी देह के रूप में कलीसिया की स्थापना की, जिसने उस एकता को बनाए रखना था जिसके लिए उसने प्रार्थना की थी। मसीह की देह में प्रवेश करके हम उसकी देह के सभी सदस्यों अर्थात अंगों के साथ एक हो जाते हैं। फूट की सभी दीवारें टूट जाती हैं: ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलतियों 3:28)।

मसीह की देह के सदस्यों की एकता शारीरिक देह के अंगों की एकता अर्थात मिलकर काम करने, एक दूसरे से प्रेम करने और एक दूसरे से सहानुभूति रखने की एकता की तरह ही होनी चाहिए। शारीरिक देह का एक अंग किसी दूसरे अंग से प्रतिस्पर्धा नहीं करता। हर अंग दूसरे अंगों के साथ मिलकर काम करता है और सभी अंगों के मिलकर रहने से देह स्वस्थ रहती है और एक होकर काम कर सकती है।

अपने लोगों से यीशु की केवल एक ही बिनती है कि वे पृथ्वी पर उसकी आत्मिक देह

बनकर रहें। उसने उन्हें हर प्रकार के दूसरे नामों वाली साम्प्रदायिक कलीसियाएं बनाने के लिए नहीं कहा था। उसके प्रति वफ़ादारी की मांग है कि हम उसकी एक आत्मिक देह बनकर उसकी इच्छा पूरी करके उसे सम्मान दें।

मसीह के लिए उपयोगिता

तीसरा, ''देह'' के रूप में कलीसिया का चित्रण मसीह के लिए उपयोगी या लाभदायक संकेत है। यह बताता है कि संसार में मसीह का काम किस तरह से होना चाहिए।

अपने जीवन और सेवा के लिए, पौलुस कह सकता था, ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है ...'' (फिलिप्पियों 1:21)। उसने किसी साम्प्रदायिक कलीसिया या किसी अन्य प्रकार के मानवीय समूह या संगठन का प्रतिनिधित्व नहीं किया था अर्थात वह लोगों के सामने मसीह की आत्मिक देह के एक अंग के रूप में जाता था। वह अपने आपको लोगों में मेल कराने के लिए परमेश्वर के एक औज़ार के रूप में देखता था: ''सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो'' (2 कुरिन्थियों 5:20)। पौलुस ने अपने कष्ट सहने को भी मसीह की देह के लिए कष्ट सहने के रूप में देखा: ''अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं'' (कुलुस्सियों 1:24)।

पृथ्वी पर मसीह के काम को आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है? अब जबकि मसीह स्वर्ग में पिता के दाहिने हाथ है तो पृथ्वी पर सेवकाई कैसे जारी रखी जा सकती है? इन प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर है कि ''मसीह की देह के द्वारा।'' कलीसिया की स्थापना करके, यीशु ने संसार की सेवा और इससे प्रेम करने के अपने साधन के रूप में संसार में अपनी आत्मिक देह भेज दी।

नये नियम में बिना देह के सिर या बिना सिर के देह होने की बात नहीं है। यदि पृथ्वी पर कोई मसीही न होता, तो अगुआई देने, निर्देश देने या उसका काम करने के लिए मसीह की देह भी न होती। यदि मसीही अपने एकमात्र अधिकार और अगुआई के लिए मसीह की ओर न देखते, तो कलीसिया सिर-रहित देह होती। यीशु अपनी कलीसिया का सिर है, और उसकी कलीसिया पृथ्वी पर उन लोगों से बनती है जिन्होंने उसकी इच्छा को मान लिया है और उसकी सामर्थ के रूप में काम करते हैं।

मसीही लोग मसीह का काम करने के लिए उसकी आत्मिक देह हैं। हम संसार की आवश्यकताओं को जानने के लिए उसकी आंखें हैं। यदि हम लोगों की आवश्यकताओं को नहीं समझते और उनकी सेवा नहीं करते, तो इसका अर्थ है कि उसकी आत्मिक देह की आंखों को दिखाई नहीं देता है। हम उसके वचन को सुनने तथा उसके निर्देशों पर ध्यान देने के लिए उसके कान हैं। मसीह की आत्मिक देह को उसकी इच्छा का बोध न देना कितने दुख की बात होगी! हम संसार में उसके वचन को बताने और उसकी महिमा गाने के लिए उसकी जीभें हैं। आज के समय में यदि उसकी देह बोल न पाए तो मसीह को कितना कष्ट

होगा। बोझ और जिम्मेदारियां उठाने के लिए हम उसके कंधे हैं। मसीह चाहता है कि उसकी कलीसिया स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो ताकि हर काम जो हमें मिले, हम उसे पूरा कर सकें। संसार में उसका संदेश ले जाने के लिए हम उसके पांव हैं। हमें उसके पांवों को हृष्ट-पुष्ट बनाकर उसके लिए चलने में फुर्ती करनी चाहिए। हमें सेवा के लिए उसके कोमल हाथ भी बनना चाहिए। आइए यह सुनिश्चित करें कि उसके हाथ सम्पूर्ण, समर्थ और सेवा के लिए समर्पित हैं।

मसीह की आत्मिक देह की उपयोगिता, बुद्धि तथा व्यावहारिकता पर विचार करें। जब भी, कहीं कोई मसीही बनता है, तो वह मसीह का कार्य करने और उसके प्रेम को दिखाने के लिए उसकी देह का सक्रिय अंग बन जाता है। इस प्रकार वह मसीह की सेवकाई को आगे बढ़ाता है। वह मसीह और उसकी देह के दूसरे सभी सदस्यों के साथ एक हो जाता है। इस प्रकार संसार में मसीह की कलीसिया की एकता स्पष्ट दिखाई देती है। हर एक मसीही अपने आपको वही नाम देता है जो बाइबल में कलीसिया को दिया गया है। वह अपनी अगुआई के लिए किसी सांसारिक मुख्यालय की ओर नहीं बल्कि मसीह की ओर देखता है जो अपनी देह अर्थात कलीसिया का सिर है। जिसके फलस्वरूप सारा आदर और महिमा मसीह को मिलती है। आपने देखा कि ''मसीह की देह'' कितनी साधारण, फिर भी कितनी समझदार और प्रभावशाली है!

अपनी सीमित मानवीय बुद्धि भी ''मसीह की देह'' की विचारधारा को समझ सकती है। यह प्रभावकारी, व्यवहार्य, और व्यावहारिक है। इससे परमेश्वर की बुद्धि तथा महिमा प्रकट होती है।

आइए हम मसीह की महिमा के लिए मसीह की देह के रूप में मसीह के लिए काम करें।

सारांश

कलीसिया पृथ्वी पर मसीह की देह है। इस सच्चाई के कारण, पौलुस ने रोम के मसीही लोगों के विषय में कहा था, ''क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं। वैसे ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (रोमियों 12:4, 5)। मसीही बनने पर, मसीह से हमारा मेल हो जाता है, जो मसीह के द्वारा एक दूसरे से एकता, उपयोगिता और मसीह के लिए लाभ है।

किसी बड़ी दुकान के आगे खड़े किए गए पुतले और जीवित मनुष्य में क्या अन्तर है! पुतले का आकार तो उतना ही है परन्तु उसमें जीवन नहीं है। इसका बाहरी रूप अर्थात देह तो है परन्तु इसके अन्दर आत्मा नहीं है। यह केवल एक आकृति अर्थात बनावटी रूप ही है, वास्तविक नहीं। जीवित मनुष्य में रूप, आत्मा और जीवन सब हैं अर्थात उसमें आत्मा और देह दोनों हैं। उसमें देह, आत्मा और प्राण है। वह सोच सकता है, महसूस कर सकता है, प्रेम कर सकता है, और आज्ञा मान सकता है।

पुतले और जीवित मनुष्य में अन्तर मनुष्य द्वारा बनाए संगठन और मसीह की देह में अन्तर को स्पष्ट करता है। मनुष्य द्वारा बनाए गए संगठन का रूप है, परन्तु उसमें परमेश्वर

नहीं रहता; केवल मनुष्य ही रहता है। मानवीय संगठन जो कुछ भी पाना चाहता है उसे मनुष्य की ही शक्ति और बुद्धि द्वारा पाया जा सकता है। मसीह की देह में आत्मा वास करता है, जो परमेश्वर के जीवन से जीवित है और उसे मसीह स्वयं अगुआई देता और निर्देशित करता है।

नये नियम की कलीसिया मसीह की देह है। हर एक सच्चा मसीही इसका अंग है। यह एक संगठन नहीं, बल्कि एक जीवन है जो मसीह के आत्मा से जीवित है। इसकी अगुआई इसका सिर अर्थात मसीह करता है। संसार में इसका उद्देश्य मसीह की महिमा तथा सेवा करना है।

क्या आप मसीह की देह के अंग अर्थात सदस्य हैं?

पाद टिप्पणी

[1]नये नियम से ''मसीह की देह'' और इससे मिलते-जुलते सभी वाक्यांश परिशिष्ट 3 में दिए गए हैं। इस सूची से आपको इस वाक्यांश के उपयोग का अध्ययन और कलीसिया के स्वभाव के इस महत्वपूर्ण पहलू पर विचार करने में सहायता मिलेगी।

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. कलीसिया के साथ सम्बन्ध में ''मसीह की देह'' वाक्यांश को दो तरह से प्रयोग करें।
2. हमारे बपतिस्मे का मसीह के साथ एक होने के रूप में वर्णन करें?
3. मसीह में आने के बारे में रोमियों 6:3 क्या कहता है?
4. विवाह के बंधन से मसीह के साथ हमारे मेल की तुलना करें।
5. मसीह के साथ मेल के बारे में रोमियों 6:4 क्या कहता है?
6. 1 कुरिन्थियों 12:13 के अनुसार हम मसीह में कैसे प्रवेश करते हैं?
7. मसीह की देह के अंग अर्थात कलीसियाएं या मसीही लोग कौन हैं?
8. एक दूसरे से हमारे सम्बन्ध में ''मसीह की देह'' वाक्यांश का क्या अर्थ है?
9. मसीह की देह की एकता के विचार को ध्यान में रखते हुए साम्प्रदायिक कलीसियाओं की विचारधारा पर चर्चा करें।
10. मसीह में हमारे मेल के बारे में गलतियों 3:28 क्या कहता है?
11. संसार में मसीह का काम किस प्रकार किया जाना चाहिए?
12. क्या कलीसिया सिर-रहित देह या देह-रहित सिर है?
13. संसार में हम मसीह की देह के रूप में कैसे काम करते हैं?
14. क्या कलीसिया और ''मसीह की देह'' दोनों एक हैं?
15. संगठन और जीव में तुलना कर इसमें अन्तर दिखाएं।